

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगोपीजनवत्सभाय नमः ॥ अथ श्रीमहा
प्रसादनाम ॥ गुप्तार्जुनसहितं श्रीकृष्णं स्वयं रूपं जहो जहो विराजते
सोऽप्यसौ श्रीगोपासी श्रीरमनलाल वावाकी आश्रिते लिखेहे सो
गोपासी श्रीपुरुषोत्तमजी माहात्म्यं कवचं नाम तस्य नेहे सो ॥ ना
मोऽस्मिन् पुराण श्रीगोवर्धननाथजी ॥ सोऽप्यसौ श्री
राजमेसंपादुर्भीषमये ॥ आपन्योरकी आपाटी वाजनी सिला
के पास ॥ सोऽप्यसौ श्रीसदा विमो रवय हो ॥ सोऽप्यसौ श्री
यक हो ॥ निरंतर वज्रमत्तन सो विहार करत हो ॥ सोऽप्यसौ श्री
केदार पर हो ॥ वाम मुखा ॥ श्रीकृष्ण दरसन देत हो ॥ सोऽप्यसौ श्री
रंतर वज्रमत्तन को बुलावत हो ॥ दक्षिण कर करि पेधारण क

लेख ॥

॥२॥

सो प्राप्ति भये ॥ पोरा सा कीये हो ॥ जो श्री आचार जी माहा
प्रभु के यहाँ हम को पधराय दीजो ॥ नव श्री आचार जी माहा
प्रभु जीने सा कीये ॥ जो सुखे न सो पधराय ॥ नव सारणी
ने श्री आचार्य जी माहा प्रभु के अंगे चाखे स्वरूप पध
राय दीये ॥ नव चाखे स्वरूप न को देखि के ॥ श्री आचार्य जी
माहा प्रभु को हत प्रसन्न भये ॥ तासमे पाय के पास भगवदी
को हत बैठे हते ॥ तब विन भगवदी न ने की नी की नी जो
रुद्र स्वरूप को रूप कर के हम को पधराय दीजे ॥ श्री मा
हा प्रभु जी के परम रूप पा पा भगवदी सची गजन धाव
न ने पा प सो वी नी की नी ॥ जो माहा राज मेरे ऊपर रूप पा

कर के श्री नव नी त प्रीया जी पधराय दीजे ॥ नव पापुने
आ सा कीये ॥ जो यहा सा सात न दा त्म ज ज सो दो संग लाति
न हो ॥ यहा हमारो सर्व स्वधन हो ॥ सो यहा हम नुम को पधराय
दे हो ॥ सो नी की भात से सेवा करे यो ॥ जव तो सो नव ने तव
सुखे न हमारो घर पधराय दीजो ॥ नव गजन धावन के
माये पापने श्री नव नी त प्रीया जी पधराय दीये ॥ सो गज
न धावन ने श्री नव नी त प्रीया जी की सेवा को हत दिन ता
ही नी ॥ सो श्री नव नी त प्रीया जी गजन धावन सो हिले ह
ने ॥ कव हू घोडा कर ते ॥ कव हू हाथी कर ते ॥ कव हू बछरा कर ते
रो से कर ते गजन की ज्य सन अप वस्था सिद्धि मही ॥ नव श्री नव

सिध ॥

॥३॥

नीत प्रीयाजी प्राश्ना करि गजन धावन को ले के श्री माहा
प्रभु जी के यहाँ पधरे ॥ सो श्री माहा प्रभु जी के सेव्य श्री नव
नीत प्रीयाजी ॥ श्री गुसांई जी के ठाकुर जी सो श्री गुसांई जी
के लाल जी टी कायत श्री गीरधर जी के माये विराजत हैं
सो श्री गोवर्द्धन नाथ जी के गोद को स्वरूप निखरत ॥ प्रभु
श्री मदन मोहन जी श्री माहा प्रभु जी सेव्य ॥ श्री माहा प्रभु
जी के श्री यमुना जी में संप्राप्त भये ॥ सो भयुत दास के ठाकुर
जी ॥ सो श्री नाथ जी के पास विराजत हैं ॥ श्री बालाजी
श्री माहा प्रभु जी के सेव्य ॥ उडेल में श्री माहा प्रभु जी श्री य
मुना जी में स्नान करि वेष्टो पधारे तब श्री जमुना जी में संप्राप्त

भये ॥ सो उडेल की ब्राह्मणी के ठाकुर सो श्री नाथ जी के पास
विराजत हैं ॥ अवधो नवनीत प्रीया जी के गोद के ठाकुर निखर
ते ॥ श्री गंगाजी श्री माहा प्रभु जी के सेव्य ॥ सो भ्रमसा
ब्राह्मणी के ठाकुर जी ॥ सो श्री नवनीत प्रीया जी के पास विराज
त हैं ॥ श्री मदन मोहन जी श्री गुसांई जी के सेव्य ॥ चोपाभाई
भंडारी के ठाकुर जी ॥ सो श्री नवनीत प्रीया जी के पास विराजत
हैं ॥ पोरतल जी श्री गुसांई जी के सेव्य ॥ संकर भाई पाधिकार
री के ठाकुर जी ॥ श्री नवनीत प्रीया जी के रसोई घर में विराजत
हैं ॥ अवधो विठल नाथ जी के सेव्य ॥ सो श्री गंगा जी में संप्रा
प्त भू भये ॥ सो श्री गुसांई जी के प्रागट से रक्क ब्राह्मण

सिध ॥ १४ ॥ परपके लाये सो श्री माहाप्रभुजी ने धरवाय लीये सो श्री
गुसाईजी श्री ठाकुरजी रक्त विदेसि के पाप मुसकाय
सो श्री माहाप्रभुजी ने पाप श्री ठाकुरजी रूप ओर पुत्र
रूप होय के पाप ही पारे लें सो श्री ठाकुरजी को तपा श्री गुसा
ईजी को नाम श्री विहृन नाथ जी धरे सो परके ठाकुरहे या
सुखे स्ववके माये नही पधारये हो सो वरे गोविंद जी माहाप्र
भुजी के माये विराजत हो श्री स्वामिनी जी श्री यमुना जी से सं
श्री गुसाईजी को प्रात्यभये सो श्री विहृन रावजी के पास वि
राजत हो ॥ १५ ॥ व श्री चंद्रावन चंद्र जी श्री माहाप्रभुजी के से
व ॥ सो पुराणोतम रास सजी पाग रामें राज पाट ऊपर रह

ने सो ऊन के ठाकुर सो श्री विहृन रावजी की डोलनि वारी
में विराजत है ॥ श्री माहाप्रभुजी श्री गुसाईजी के सेव्य ॥
जो राजा जो निशिधुजी के ठाकुरजी ॥ सो श्री विहृन रावजी
की डोलनि वारी में विराजत है ॥ श्री वालकृष्णजी श्री
माहाप्रभुजी के सेव्य ॥ जो मंसा विलाई वारी ठेकरी के ठाकुर
जी सो श्री लाल मराजी माहाप्रभुजी के माये विराजत हो श्री
वज्रनाथजी श्री गुसाईजी के सेव्य ॥ सो श्री वालकृष्णजी की
गेदमें विराजत है ॥ श्री वालकृष्णजी श्री माहाप्रभुजी के
सेव्य ॥ सो राजा दुवे माधो दुवे के ठाकुरजी ॥ सो की लन फेरी में
वल्लभ रास मुखी या के माये विराजत है ॥ श्री वालकृष्णजी

सिख ॥

॥१५॥

श्रीमहाप्रभुजीके सेव्य ॥ तो रागां व्यास के ठाकुरजी सो व
लदेवजीमुखीया के माये विराजत हैं ॥ पवगां मकां करे
लीमें ॥ श्रीद्वारिका नाथजी श्रीमहाप्रभुजीके सेव्य ॥ सो उ
राचीन राजा ॥ पंवरि सके ठाकुरजी ॥ सो सेठ उरु के नमदास
संभरवार के ठाकुरजी ॥ सो उपव वरे श्रीबालकस्वामीजी महा
राज के माये विराजत हैं ॥ श्रीमथुरेसजी श्रीमहाप्रभुजी
के सेव्य ॥ सो श्रीमहाप्रभुजी श्रीयमुनास्नान करत होते ॥
तासमें आप के जने ऊँ सो उरुमि रहें ॥ सो आपने पधराय ली
ये ॥ सो सखी गेविंद वस भला के माये पधराय दीये ॥ सो
श्रीठाकुरजी श्रीवध्वभजी महाराज के माये विराजत हैं ॥

पवगां मउदयपुरमें ॥ श्रीमहाप्रभुजीके सेव्य श्रीस्था
मसुद्धाजी ॥ वे स्ववस्वामीजी के ठाकुरजी ॥ आपकी स्व
ईकाते प्रगट भये ॥ सो उपवउदयपुरमें ॥ श्रीगोपिका लंका
रजी के माये विराजत हैं ॥ श्रीवृंदावन चंद्रजी श्रीगुसाई
जीके सेव्य ॥ सो ताजवीवी के ठाकुरजी ॥ सो श्रीगोपिका
लंकारजी के माये विराजत हैं ॥ महाराज के ॥ पवगां मजो
पपुरमें ॥ श्रीबालकस्वामीजी श्रीमहाप्रभुजीके सेव्य ॥ सो
रंकसमें श्रीमहाप्रभुजी विश्रान पाट पर विराजत होते
तासमय सखी कटहरीया आप के सेवक होते ॥ सो आप सो की
नती कीनी जो महाराज आप मो कूं आप लपा करि के उप

सिसेव्य॥

॥॥॥६॥

ने स्वस्वपुपधराय दीजे॥ तव पापनें श्री यगुना जी रे उका
यो श्री हस्त सो सस्वपुनाय के पधराय दीये॥ ओर अज्ञा
कीये जो हमारे ही सस्वपुने॥ सो जो धपुर में श्री वजापी स
जी मा हा राज के माये विराजत रहे॥ ओर श्री मरली मनीह
र जी श्री घनस्याम जी के सेव्य॥ सो श्री कालकृष्ण जी के मा
स विराजत रहे॥ श्री मदन मोहन जी॥ श्री स्वामिनी जी॥ लक्ष्मी
मा हा प्रभु जी के सेव्य॥ सो लक्ष्मी में श्री मा हा प्रभु जी पंचग
गा के तीर पर विराज के स्थान करत रहे॥ अस समय श्री मदन
मोहन जी॥ स्वस्ति ते श्री स्वामिनी जी सहित वगडपये से
पापने पधराय दीये॥ सो श्री मा हा प्रभु जी के सेवक पंतर

ग सेठ उरु के तम दास जी॥ आप के प्रति सत्पास किहते
सो वीनती कीनी॥ जो मा हा राज में सेव करतो॥ आप ही की क
हं॥ तव पापनें हपावारे के श्री मदन मोहन जी श्री स्वामि
नी जी सहित पधराय दीये॥ ओर अज्ञा कीये जो हे हमारे ही
स्वस्वपुने॥ सो सेठ उरु के तम दास के ठाकुर जी॥ सो जो धपु
र में श्री टीकम जी मा हा राज के माये विराजत रहे॥ प्रवणम
चा फासें नीमें॥ श्री स्वामिनी हर जी श्री मा हा प्रभु जी के
सेव्य॥ सो बडे सरदास जी के ठाकुर जी॥ जिनने सरस्वाम
के कीरतन कीये॥ नपां श्री कालकृष्ण जी श्री गुलाब जी
के सेव्य॥ सो हरी दास की वेटी ज सो दास के ठाकुर जी॥ त

सिंघेय ॥

॥ १७ ॥

फाया के सत सग ते सग रो सहर वै लख भयो ॥ श्री मदन मोहन
जी श्री गुसाई जी के सेव्य ॥ सो राजा जेमल सिंघ जी की वेद न के
ठाकुर जी ॥ श्री मदन मोहन जी श्री गुसाई जी के सेव्य ॥ सो स
त भामा जी के ठाकुर जी ॥ तथा श्री गिरधर जी के सेव्य स्वरूप
श्री मुरलीधर जी ॥ तथा श्री बालक रूप जी ॥ ये सब स्वरूप श्री
कुंजलाल जी महाराज के माये विराजत हैं ॥ अथ गांम बंदी
में ॥ श्री गोपाल लाल जी श्री गुसाई जी के सेव्य ॥ सो लाल
रं के ठाकुर जी ॥ सो रामो हर जी महाराज के माये विराजत
हैं ॥ अथ गांम कोटो में ॥ श्री मथुरेस जी श्री माहा प्रभु जी के
सेव्य ॥ गांम करनावर में राकस में श्री अचार्य जी माहा प्र

भु जी स्नान करि के श्री मन्ना गवत को पाठ करत हते ॥ तास
में पचना महास जी आदि भगवदीय वैठे हते ॥ संवत् १९५६
के फागुन सुदी अष्टे दिन श्री यमुना जी की टायरी ॥ जामे
सूकोटि बंद पंला बराय श्री मथुरेस जी प्रगट भये ॥ दोरे के श्री
माहा प्रभु जी की गोद में ॥ पाय विराजे ॥ सो माहा प्रभु स्वरूप
हो ॥ सो पचना महास जी ने दीन ती की नी जो माहा प्रभु ज
मो कंठ पाकर के राकस रूप धराय दी जो यो सो श्री मथ
रेस जी को रामे श्री दी सत जी के वंश नामे श्री कन्हैया लाल
जी महाराज के माये विराजत है ॥ दोरे श्री मथुरेस जी श्री
माहा प्रभु जी के स्वरूप ॥ सो पचना महास जी की वेदी नुल सा

सिख ॥

॥ १८ ॥

काईक हूँ श्रीमपुरेसजीनें अपनी स्वरूप को दसरो स्वरूप
प्रगट कीये ॥ सो तुलसा काई को सो भाजते ॥ सो श्रीमपुरेसजी
श्रीमुरलीधरजी माहा राज के माये विराजत हैं ॥ श्रीनमनीत
रायजी श्रीमाहाप्रभुजी के सेव्य ॥ सो माहावन की क्षत्राणी
को श्रीयमुनाजी में ते चार स्वरूप प्रगट भये ॥ श्रीनमनीत
श्रीकाजी के संगत ॥ क्षत्राणी देवा कपूरने को हत दिन ताई से
बाधरी ॥ सो श्रीदेवा कपूर चरणारविंद में प्रान्त भये नव
श्रीनमनीत रायजी आप अंतर ध्यान भये ॥ सो माहावन में
अपनी खानने खान जादी के लीये महल बनायो ॥ सो वामहल
की नीम में ते श्रीनमनीत रायजी प्रगट भये ॥ सो अपनी खानने जा

दीव दीये ॥ सो खान जादीने को हत दिन ताई से कावनी ॥ सो
श्रीनमनीतजी को रामें ॥ श्रीगोकुलनाथजी माहा राज के माये
विराजत हैं ॥ श्रीनवनीत प्रियाजी श्रीमाहाप्रभुजी के सेव्य
सोगगाजी में प्रगट भये ॥ सो हरवंस पाठ के ठाकुर
जी ॥ सो माधोरायजी माहा राज के यहां विराजत हैं ॥ श्रीम
हजपातगदोसी के
ठाकुरजी ॥ सो श्रीमाधोरायजी माहा राज के माये विराजत
हैं ॥ सो श्रीमाहाप्रभुजी के सेव्य ॥ पंदेलमाव
जी विराजो के ठाकुरजी ॥ सो को रामें सां चोर बास रा के मा
ये विराजत हैं ॥ श्रीगोकुलनाथजी श्रीगुप्तोईजी के सेव्य

सिंघ ॥
॥ ६ ॥

आपके अंतर्गत पा पा चमकवरी हरी रासव वास के ठाकुरजी सो
कोरामें श्री गोपाल लाल जी माहाज के माये विराजत हैं श्री वजे
स्वर जी श्री स्वामिनी जी श्री गुसाई जी के सेव्य ॥ सरन के साहकार श्री
बंटा के बह के ठाकुरजी ॥ जा को मुगल ने डर हीयो सो श्री गुसाई
जी आपने या बक्रीयो ॥ मुगल बं ड कर बाय के निकस बाय ही
नो ॥ ओर बह के माये कपा करि के ॥ श्री ठाकुर जी श्री स्वामिनी जी
सहित पधराय दीये ॥ सो वजे स्वर जी कोरामें श्री कन्हैया लाल
जी माहाज के माये विराजत हैं ॥ श्री मदन मोहन जी ॥ सूर
प श्री गुसाई जी के सेव्य ॥ सो तिघरा के सो राय जी भर के माये वि
राजत हैं ॥ सो हाल श्री कन्हैया लाल जी की बहन श्री कमला बेटी

जी के माये विराजत हैं ॥ बालक ह्य श्री श्री गुसाई जी के सेव्य
सो वारों धीऊ धीया वामन जी मगन जी के माये विराजत हैं ॥ श्री
बालक ह्य श्री श्री गुसाई जी के सेव्य ॥ सो वाग जी का सी के भर
के माये विराजत हैं ॥ सो हाल श्री जमुना बेटी जी के माये विरा
जत हैं ॥ श्री बालक ह्य श्री श्री गुसाई जी के सेव्य ॥ सो गो की साल
हरी क ह्य भर के माये विराजत हैं ॥ पधगां म सेर गट में ॥ श्री
कल्याण राय जी श्री माहा प्रभु जी के सेव्य ॥ सो पद ले प्रथम
विराजते ॥ सो राखत लाव के ऊपर ॥ सो देवी करि के पूजित ॥ सो श्री
माहा प्रभु जी आप वार ले पधारो ॥ सो तलाव परिराजो ॥ नव श्री
कल्याण राय जी पे देखि परी ॥ नव आपने विचारो जो वडे प्राची

विष्णु

१०॥

नसरूप श्री ठाकुर जी को हो। स्त्री को अंगार को को यो हे नहो
कोरो सो मंदिर हो। ता के मोतरः पाप पधारो। नवः पापने प्रकी
जो वा काः पापने प्रहा अंगार की यो हो। नव श्री ठाकुर जी आशा
कीये जो ये सगरो गांम सती को उपासि करे। सो यह को ईजा
नत नाही। जो श्री ठाकुर जी के सो हो त हो। ना सदेवी करि के प्र
जित हो। नवः पापने सा रो प्रारि के पाग वधाई। पोर र कट्ट
के वस्त्र धराये। नव या के पुजारी गांम में गये हते सो आये। त
व या ने यह कहो। जो यह देरी में सु श्री ठाकुर जी को सरूप कोने
की यो हो। नव श्री माहा प्रभु जी ने आशा कीये। जो श्री ठाकुर जी
को सरूप हो। या कह दे की करि के को प्रजत हो। नव का का वे रा तथा

हस्य दास जी। सा का गद डवत करि के की नती की नी। जो माहा
जहम तो के धू जो न त ना ही। नवः पापने आशा की जो जो तीने
जने नुम अस्त्रा न करि के को। नवः प्रस्थान करि के पाये। नव
पापने नाम निवेदन करवाये। पाये पाप र क दिन वा हा ही की
विराजे। श्री ठाकुर जी को सेवा अंगार कीये। पोर गांम में जितने
मनुस्य हते सो सब पाप के सेवक भये। श्री ठाकुर जी को नाम
प्रजापति गायत्री प्रसादा। सो का का वे रा तथा हस्य दास घघ
रीया। नय जादवे दहा सरव का सा तीने जने मिलि सेवा कर
ते। सो तीने न के ठाकुर जी सो वटे श्री जदु नाथ जी माहा राज
के माये विराजत हैं। श्री कृष्णाय जो श्री माहा प्रभु जी के सेव

[illegible][illegible]

11821
11822

पद्य ॥

१२॥

ये विराजत हे ॥ श्रीमदनमोहनजी श्रीगुलाब्दीजी केसेव ॥ सो
प्रवर केराजा केरापुरजी ॥ जाकेसतंगतेदयाभयेकावेस्वव
भये ॥ सो श्रीवज्रपतिजी महाराज केमाये विराजत हे ॥ श्री
मदनमोहनजी श्रीपावावेजी महाराज प्रभुन केसेव ॥ अरु
नमें राक्षसमें श्रीमहाराज प्रभुजी विसा केहते ॥ तासमय वज्र
में ते प्रगट भये ॥ सो श्रीमहाराज प्रभुजी की गोदमें पाय विराजे
सो प्रभु दास जलोरा पाप के संग हतो ॥ सो आपसो कीनती की
नी ॥ जो महाराजि धीराज राक्षस रूप मोक्ष पाप करके
पधराय दीजिये ॥ सो मदनमोहनजी प्रभुजी दास जलोरा के
रापुरजी ॥ सो श्रीपावाजी महाराज केमाये विराजत हे ॥ श्रीना

नजी श्रीमहाराज प्रभुजी केसेव ॥ शंभारी राक्षसी हनदमेर
हती ॥ श्रीमहाराज प्रभुजी सो स्वरूपासक्ति हती ॥ सो आपविनस
राक्षस नर हती ॥ सो आपसे यद्वीनती करती ॥ जोमेते आप
पकीसे का करती ॥ राक्षसमें श्रीमहाराज प्रभुजी सरस्वती स्मान
करत हते ॥ तवतासमय श्रीसरस्वती जीमेस्व श्रीनवनीतवी
याजी चरन चोकी सहित प्रगट होयके ॥ श्रीमहाराज प्रभुजी की
गोदमें आप विराजे ॥ तव श्रीमहाराज प्रभुजी देखेवो हत प्रस
न भये ॥ तासमें शंभारी समीप दातो हती ॥ नवकासमय श
ंभारी सो आपने आपा कीये ॥ जो नमस्कार से का करे हो तो
रो ते वृद्धमारी ही स्वरूप पधराय देये हो ॥ सो राक्षस शंभारी के राक्ष

विषय॥

॥१२३॥

जी॥ सो धर धार धर के ओ लाल जी बहि के पु लाली सो ओ ला
ल जी श्री रसि ध लाल जी के माये विराजत है॥ श्री मदन मोहन
जी श्री गो कुल नाथ जी के सेव्य॥ सो ओ लाल जी की गाल मंड
ली में विराजत है॥ श्री मदन मोहन जी श्री माहा प्रभु के सेव्य
सो कास वाटा धारे गोपाल दास जी के दाधुर जी॥ त था श्री
नीत प्रो वा जी श्री गुलाब जी के सेव्य॥ सो फांन बहि के दाधुर जी
श्री लाल जी स्वरूप दोया॥ श्री गुलाब जी के सेव्य नामें रक्ष को ना
म लुभ बन लाल॥ सो मोरी व ह के दाधुर जी॥ जा को जने कु के चि
ह है॥ ओर जा के पद सी जत जात मां रन रात ने न न की धारा
व है ता जात॥ ओर दूसरे को नाम मदन मोहन जी विरक्त के दा

धुर जी सो श्री बाल कृष्ण जी में सु डो वरी ने कुले ल ल ग य के म द
न मोहन जी को स रूप प्रगट कीयो॥ श्री लाल जी श्री गो कुल ना
थ जी के सेव्य वे स व स रूप श्री वजरतन जी माहा राज के माये
विराजत है॥ श्री मदन मोहन जी श्री गुलाब जी के सेव्य॥ सो हर जी
को हारी के दाधुर जी॥ त था श्री कृष्ण जी श्री गुलाब जी के सेव्य सो
आगरे कोरे वे स व धनी धनि कानी बाहिर सो वते॥ जिन के ओ
दाधुर जी ने भीतर बुलाव ली को॥ तिन के दाधुर जी सो ओ
द जे स्वर जी माहा राज के माये विराजत है॥ श्री मदन मोहन
जी श्री गो कुल नाथ जी के सेव्य॥ श्री नथू जी माहा राज के माये वि
राजत है॥ श्री माहा प्रभु जी के मंदिर में॥ श्री पुनाथ जी के से

सिद्ध ॥
॥ १४ ॥

वसरूप देय ॥ सो श्री माहाप्रभु जी के माये विराजते हैं ॥
गजराज ॥ श्री ठापुर जी के सेत वे के सितोना ॥ सो श्री वधु मजी
माहाप्रभु के माये विराजते हैं ॥ एव गं म मथुरा में ॥ श्री मदन
मोहन जी श्री गुसाई जी के सेव ॥ एक सम में श्री गुसाई जी गऊ या
रऊ पर विराजते हैं ॥ सो रिकी के स जी पाप स स ह पा स कि ह ते
सो पाप विना रा ब्रह्म रा न रहने ॥ सो पाप से यही की नती क
रते ॥ जो राज सेवा सो में पाप ही की करे ॥ न व श्री गुसाई जी
श्री यमुना जी में स्नान करे को पधारो ॥ सो श्री मदन मोहन जी
भूजने हूँ ही को पो र को की को चिन्ह हो ॥ पो र धो जी को चिन्ह
हो ॥ सो रिकी के स जी सो पाप का की दो ॥ जो न हमारे सेवा करि वे

की करत है ॥ सो सेवा करि ॥ ये हमारे ईसरूप को को पधारो
हो ॥ सो श्री मदन मोहन जी श्री स्वामिनि जी साहेत रिकी के स
के ठापुर जी ॥ श्री मदन मोहन जी श्री गुसाई जी के सेव ॥ सो
पाप रे करे को जी या ब्रह्म रा धनी धानि या नीचा च हारे
वस जी के स पा पा न भगवदी वै सध मये ॥ न व श्री गुसाई जी
ने सा लिग रा मा जी में श्री मदन मोहन जी के स रूप प्रगट
कीये ॥ पो र दे की में श्री स्वामिनि जी कीये ॥ सो वे धनी धन्या
नी के ठापुर जी ॥ श्री यमुना जी श्री माहाप्रभु जी के सेव ॥ सो
एक सम य श्री माहाप्रभु जी ॥ श्री नवेनी जी में स्नान करत
हते ॥ सो नवेनी जी में स्नान यमुना जी प्रगट मये ॥ ना सम

श्रीसेव्य॥

॥१५॥

यत्कस्मात्तव लटाडे हते॥ सो पदमाश्रय लने कीन ती प्रीती जो
मां हाराज कृपा करे सो ओपधराय दीजे सो ये पदमाश्रय
ल के ठाकुर जी॥ श्री दारिद्र्य नाथ जी श्री गुसांई जी के सेव्य॥ सो
हरीदास जी मेहता चारे के ठाकुर जी॥ जाके संग तेरा जाजे
मलसिंघ जी वैष्णव भये॥ और श्री मथुरा नाथ जी॥ श्री
स्वामर के वेरा गो कुल मर॥ गोविंद मर के ठाकुर जी॥ और
श्री अमर ताराय जी॥ सो श्री गुसांई जी ने श्री गोर्धन नाथ
जी के प्रसादी चंदन को स्वरूप बनायो श्री हस्त सो॥ सो उपा
पने आशा करी॥ जो वरे अमुत स्वरूप भये॥ श्री गुसांई जी
के हत दिन न ताई का सो रचे ले॥ श्री गो कुल नाथ जी ने के हत

दिन ताई से का की नी॥ सो ये सब स्वरूप मथुरा जी में श्री वि
ठल नाथ जी तथा पुरुषोत्तम जी मा हाराज के माये विराज
त हो॥ अवगां म गोपालपुर में॥ श्री मदन मोहन जी श्री मा
हाराज जी के सेव्य॥ सो जगत्तानंद दास जी के ठाकुर जी सो
श्री दारिद्र्य जी मा हाराज के माये विराजत हो॥ सो छेरे
मदन मोहन जी श्री गो कुल नाथ जी के सेव्य॥ सो ऊ श्री दारि
द्र्य जी के माये विराजत हो॥ अवगां म कोंमवन में॥ श्री
गो कुल चंदमा जी श्री माहाराज जी के सेव्य॥ श्री यमुना जी
में सुमाहाराज की सगरी के चारि स्वरूप प्राप्त भये॥ जा
में श्री गो कुल चंदमा जी श्री नवनीत प्रीया जी के संग प्रादुर्भा

सेव्य॥
१९६॥

वभये॥ सो नारायण दास जी ब्रह्मचारी श्री माहा प्रभु जी
के अंतरंग रूप पाव भगवदी होते॥ सो श्री माहा प्रभु जी ने सो
पद के नीकी नीकी॥ जो माहा राजा धिराज मो को रूप कर के प
द रूप पधराय दी जो॥ तब श्री माहा प्रभु जी ने प्राप्ता करी जो
यह हमारे सर्वस्व रहे॥ सो हम ते को पधराय देहे सो या
की नीकी भात सो सेवा करीये॥ सो नारायण दास जी ने अ
नेक भात सो ला डल राय के रियाये॥ सो श्री गोकुल चंद मा
जी नारायण दास के ठा कुरजी॥ सो श्री गोकुल चंद मा
जी के सेव्य॥॥ पागरा में धनी धन्यानी श्री गुसांई जी के प
रम रूप पाव भगवदी होते सेवक सो होर की जिमीन की

परीक्षा करते॥ और मना पंन्ना क माय के द्रव्य को हत ले के
प्रावते॥ सो रस्ता में राक दस टग संग भये॥ सो काठाने मारि
वे को उपाय कीने॥ ना समय श्री गुसांई जी ने पावे स्वयं को
रसन दीये॥ तब राका दस टग दूपा के सत्संग ते वे स्वयं भये
सो रातिन के ठा कुरजी॥ सो श्री गोकुल चंद माजी की गोद में
विराजत रहे॥ सो मदन मोहन जी श्री माहा प्रभु जी के सेव्य॥
सो नरहर जो सो के ठा कुरजी॥ सो श्री गोकुल चंद माजी की
ठोलति वारी में विराजत रहे॥ सो गलपस जी श्री रघुनाथ जी
के सेव्य॥ सो श्री गोकुल चंद माजी के पास विराजत रहे॥ अथ श्री
मदन मोहन जी ये सरूप श्री गोकुल चंद माजी माहा राज के मा

सेव्य॥

॥ १२७ ॥

विधिराजतहो॥ श्रीमहाप्रभुजेसेअयसनारायणकेठकुरजी
सेनारायणभरजीनेवतीससेमयसकीये॥ नवअग्रिकुंड
मेंसुप्रदुर्भावश्रीमदनमोहनजीभये॥ सोश्रीमुखतेआ
आकीये॥ जोतिहारेयसहो॥ सेप्ररूपुहकेतमनेभोगकी
येहो॥ ओरनुमारेकुलमेसासातपूरीपुहकेतमकेप्राग
समयेहो॥ ओरमायामतकेरवंडनकरिमक्तिमगीस्थाप
नकरेगे॥ ओरदैकीजीवनकोउधारकरेगे॥ ओरनामश्री
वल्लभाचार्यजीहोयगे॥ मूलमेंहोयकीडाकरेगे॥ सारस्य
तकल्यकीनित्यलोलाप्रगटकरिदैकीअधिकोअनुभव
करावेगे॥ सेकामारगपुगटकरिदैकीसुखिकोभगवदसेवा

करावेगे॥ सोयेआजाआपश्रीमुखतेकीये॥ सोश्रीमदनमो
हनजीकेपांचसियाहो॥ ओरजनेऊकोचिन्हये॥ सेआपकेठा
कुरजीहो॥ सासुआदुवैयवकेमयेनहोपधारो॥ श्रीमहाप्रभु
जीकेसेअश्रीमदनमोहनजी॥ श्रीगुप्तदैकीकेसातमेलात
जीश्रीघनस्यामजीमहाराजकेमयेविश्रजतहे॥ ओरश्रीम
पुरावकीटीका॥ श्रीमहाप्रभुजीकृतसोघनस्यामलाल
अहर्दिशिअवलेकनकरते॥ सेश्रीमपुरावकीटीकाश्रीम
दनमोहनजीकेसाविश्रजतहे॥ श्रीमदनमोहनजीके
जगतश्रीत्यागकीजाहो॥ सेवेरानादकरिदैरजमकनको
बुलायेहो॥ श्रीजलालुल्लाहश्रीघनस्यामलालजीकेसेअ

मिस्त्रेव्यां

11211

सो श्रीमदनमोहन जी के पास विराजत है ॥ सो सब सरूप
 श्रीब्रजपाल लाल जी माहाराज के माये विराजत है ॥ अवगां
 म कासी में ॥ श्रीमुकुंदराय जी श्रीमाहाराज जी के साथ ॥ सो रा
 म रास मुखी बा के रापुर जी ॥ सो श्रीगोवर्धन नाथ जी की गोद
 में विराजत है ॥ सो श्रीराऊ जी माहाराज ने श्रीगोरधर जी महा
 राज के माये पधारय दीये ॥ श्रीगोपा मलाल जी श्रीगुलाब जी
 के साथ ॥ सो धारवाड़ के रापुर जी ॥ श्रीगोपीनाथ जी श्रीगु
 लाब जी के साथ ॥ सो जमुना बेरी जी के रापुर जी ॥ सो श्रीगोपा
 ल लाल के मंदिर में भोत्व विराजत है ॥ से सब सरूप कासी में
 श्रीगोरधर जी माहाराज के माये विराजत है ॥ अवगां ममम

ईमे ॥ श्री बालकृष्ण जी श्री माहा प्रभु जी के सेव ॥ सोर जो क्ष
 करणी ॥ आप प्रति सत्पा सक्ति हती ॥ आप प्रभो ॥ प्रति तरंग कृपा पा
 च हती ॥ ओर ॥ आप विन राक्षस रा हन रहती ॥ सो ॥ आप सो यही
 चीनती करती ॥ जो सेवा तो मे ॥ आप हो प्रो करूगी ॥ सो ॥ आप ने श्री
 बालकृष्ण जी को सत्प पधराय होये सो ॥ आप ने ॥ आपा कीये ॥
 जो यह तो को ॥ आप ने हो सत्प पधराय दे हो ॥ बाल लीला तथा
 कि सोर लीला को हन र जो प्रो कीये ॥ श्री बालकृष्ण जी र जो का
 ई के ठा कुर जी ॥ तथा श्री नयन नयन जाया ॥ श्री गुसाई जी के सेव
 सो श्री वाघ जी र ज पूत के ठा कुर जी ॥ तथा श्री मदन मोहन
 जी श्री गुसाई जी के सेव ॥ सो सेठ ॥ आप राई के ठा कुर जी जाने

॥ श्री गणेशाय ॥
॥ १८ ॥

रक्त जारु पेया के खरवृजोऽपगीकार करायो सो श्री बाल
कुम्भ लाल की गोद में विराजत होव जे श्री महन मोहन जीना
म श्री मोहन जी सो श्री गुसाई जी के सेव्य सो राजाऽप सधरन
जी के ठाकुर जी श्री गुसाई जी ने श्री हस्त सो सिद्ध कीये सो
रोचो सत्पुत्र मर्म में श्री गोवर्धने स श्री माहाराज के माये वि
राजत है ॥ श्री महन मोहन जी चन मुनि ॥ सो मही धरक
नवाई के ठाकुर जी ॥ नरहर जो सी के सत संग ते वै सव भये
अली नवाई फोर नट वर जी ॥ फोर बडे कल्याण राय जी माहा
राज के सेव्य ॥ सो रोचो सत्पुत्र मर्म में जो रा में विराजत है ॥ न
गावेरी जी के माये ॥ प्रवगां म मरुत कार में दस रा में ॥ श्री म ८५

माहाराज श्री गुसाई जी के सेव्य ॥ प्रवगां म मरुत में ॥ श्री बाल
कुम्भ लाल माहा राय जी के सेव्य ॥ सो श्री माहा प्रभु जी के ज
नेऊ में उर में श्री जमुना जी में त प पशे ॥ सो श्री बजरत्न जी
माहाराज के माये विराजत है ॥ प्रवगां न वनी न प्रो का जी श्री गु
साई जी के माये ॥ सो जीव पारित्य के ठाकुर जी ॥ सो श्री वसुध जी
माहाराज के माये विराजत है ॥ प्रवगां म राजनगर में ॥ श्री न
टवरी माहा राय जी के सेव्य ॥ सो श्री गुसाई जी के सेलिवे
के ठाकुर जी ॥ सो श्री मधुरेस जी की गोद के ठाकुर जी ॥ तथा
माहा राय जी के माये ॥ सो गोपाल दा
सन रोटा वारे के ठाकुर जी ॥ तिन हं श्री माहा प्रभु जी ने नाम

1111201

[illegible]

हे सेव्य

२३॥

हा प्रभु जी ने जो यानंद दास श्री के माये पधारय होये सेवे
त दिन तो हे सेव्य की नी ॥ नंद दास जी ने की नी जा पाये तो कुल
दास जी ने की नी जा पाये मधुरा मधु जी ने की नी जा पाये हर
जी भाई ने की नी ॥ से लाडिले सजी ये रावल में मगन जी माहा
राज के माये विराजत है ॥ से श्री मदन मोहन जी
के सेव्य ॥ गुजरात में श्री गुलाम ईजी को हुपा पात्र पटेल होतो
य के परोस में वनीयां कः पन्थ मार गी होतो से पटेल के सत
सगते वनीयां पन्थ मार गी पर वैल व भयो से श्री मदन मो
हन जी या पटेल के ठाकुर जी श्री लाडिले सजी के विराजत
है ॥ से मगन जी माहा राज के माये विराजत है ॥ प्रवगा मज

नगर में ॥ श्री दासादर जी श्री माहा प्रभु जी के सेव्य ॥ से गुलाम
समराई के ठाकुर जी ॥ तथा मदन मोहन जी ॥ श्री गुलाम ईजी के से
व्य से दया भवैया के ठाकुर जी ॥ से राहो क स रूप वज्र वल
भजी माहा राज के माये विराजत है ॥ तथा श्री दासादर जी ती
राथ के ठाकुर जी श्री माहा प्रभु जी के सेव्य ॥ से दासादर कुंड
में प्रगट भये ॥ से गिरनारा के माये विराजत है ॥ प्रवगा
मगल वंदर में ॥ से मदन मोहन जी श्री माहा प्रभु जी के सेव्य
से नारायण दास नगर टाकरे के स ठाकुर जी ॥ से श्री गोपी
नाथ जी माहा राज के माये विराजत है ॥ श्री मदन मोहन जी
श्री गुलाम ईजी के सेव्य ॥ से साजा जै मलसिंग जी के ठाकुर

से ॥
॥ २३ ॥

जो सो हरि का ना प जो मा हा राज के माये विराजत है अ व गां म रा
ज को ट में ॥ श्री वाल ह ल म जो श्री गु सा ई जी के से व ॥ सो क ल म भ र जो
के हा कुर जी सो र न के र त के मा ये विराजत है अ व गां म न वा न ग
र मे ॥ सो म हा म भ जो क ल म श्री म द न मो ह न जी व न पु न स र
र का ल मि नी जी ल मि नी सो र क ल म व श्री मा हा न भ जो श्री म वे
र ती जी मे स्नान करत है सो ल मे श्री म द न मो ह न जी श्री ल मि नी
जी ल मि नी श्री म वे र ती जी मे ल मि नी दु श्री व म वे र ती ल म व ग र प र
हा स आ पु रे स सु हो वे टे ह ते ज व आ प सो वी न ती की नी जो मा
हा रा जा पि रा ज ये स र प मो इ षा प क पा क रि के प ध रा व दी जे
त व श्री आ चार्य जी मा हा प भ न ने ॥ श्री म द न मो ह न जी ग हा ध

र हा स को प ध रा व दी ये ॥ सो म द न मो ह न जी ग हा ध र हा स जी के
हा कुर जी ॥ सो म द न मो ह न जी श्री गु सा ई जी के से व ॥ सो
उ ह पो त म हा स उ स क र ना के हा कुर जी ॥ तथा श्री न व नी त प्री या
जो श्री गु सा ई जी के से व ॥ सो र क रो क रो श्री गु सा ई जी की से व क
पर म क पा का व भ ग व दी ह ती सो श्री न व नी त प्री या जी की से व नी की
भां त सो व र ती सो हे व ता न के वि मा न नी चे षा य पु जो सो वो ह त
उ पा व करे पर तु उ टे ना ही सो वा रो क री ने र क म री म रे वे को क
ल ही ये ॥ सो वि मा न उ र के त र ग मे ग ये ॥ त व वा रो क री के स त स
ग ते वा गां म को रा जा वै ह म व यो ॥ सो श्री न व नी त प्री या जी या
हो क री के हा कुर जी ॥ तथा श्री म द न मो ह न जी श्री गी र ध र जी के

हे सत्यः॥

सिध॥ सो पुतये नम दास पुतये नम के राकुरजी सो राचारे स्व
रूपन वन गये श्री रजराय जी मा हा राज के माये विराजत है रा
वगांम मोड़ की में॥ श्री नंदन को न जी वन मुज लक्ष्मी पुतये
जा लक्ष्मी के भई रूप मगरी रास के राकुरजी जा के सत संग
ने गो इ देस के नाग यरा रूप की दे मान वै सपथ ये सो तिन के
राकुरजी को न गरी रास के राकुरजी मा हा राज के माये विरा
जत हो सो भव मोड़ की में श्री कल राय जी मा हा राज के माये
रा कृत है॥ जिन स श्री कोरा जी मा हा राज के माये है श्री नंदन परती
न जी के हो श्री गिरधर जी के रे लवे के राकुरजी सो ऊ श्री कोरा
जी मा हा राज के माये विराजत है रावगांम मुज में सो पुतये नम

वालक्ष्मी वानरायरा हास के राकुरजी तथा श्री मा हा प्रभु जी के च
दन के चरत चिन्ह सो वानरायरा हास जी की वेटी के वंस में मंन
जो सी के माये विराजत है॥ श्री रात श्री मा हा प्रभु जी के तथा श्री रा
मा हा प्रभु जी के तथा लाल रूप न के न च स्व रूप॥ सो श्री गुरत
पर जी मा हा राज तथा श्री मा घोराय जी मा हा राज तथा श्री का
थी जी मा हा राज तथा श्री रन कोड़ जी मा हा राज का सी वाली तथा
थी श्री लाल मगरी जी मा हा राज आदि पुरा चीन स्व रूपन के दर
के वचना मत सुने उमाता लिखे है श्री पुतये नम जी मा हा रा
जः प्रभु ज श्री रमालाल जी कृत सुम मस्त श्री कृष्ण सरां
मम॥ म १॥ १॥